निजामपूर जैताणे शिक्षण प्रसारक मंडळाचे

आदर्श कला महाविद्यालय

निजामपूर जैताणे ता साक्री जि धुळे

NAAC Reaccredited

हिंदी विभाग

आयोजित

Add on Course

On

हिंदी भाषा एवं संप्रेषण के साधन

1 अगस्त 2018 से 30 अगस्त 2018

निजामपूर जैताणे शिक्षण प्रसारक मंडळाचे

आदर्श कला महाविद्यालय

निजामपूर जैताणे ता साक्री जि धुळे

NAAC Reaccredited

Brochure

2018-2019

Add on Course

On

हिंदी भाषा एवं संप्रेषण के साधन

1 अगस्त 2018 से 30 अगस्त 2018

हिंदी विभाग

डॉ. व्ही.जी.गुरव
समन्वयक

डॉ.ए.पी.खैरनार
प्राचार्य

महाविद्यालय का परिचय

आदर्श कला महाविद्यालय ग्रामीण परिवेश में स्थित यह वह महाविद्यालय है, जिस महाविद्यालय को जगन्नाथ कडवादास शाह जी के वैचारिक संस्कार मिले हैं। इनके बेटे ॲडव्होकेट बाबासाहेब शरदचंद्र शाह जी की दूरदर्शिता ने संस्था एवं संपूर्ण आदर्श परिवार को वटवृक्ष के रूप में परिवर्तित किया है। इसी दूरदर्शिता का परिणाम है कि सन् 1995 ई. में आदर्श कला, महाविद्यालय की स्थापना हुई है। संस्था के अध्यक्ष तथा ॲडव्होकेट बाबासाहेब शरदचंद्र शाह जी ने इसी वैचारिक प्रतिबद्धता एवं विरासत का व्यापक धरातल पर निर्वहन किया है। विचारणीय है कि बाबासाहेब के समाज सापेक्षी मार्गदर्शन ने महाविद्यालय को विशिष्ट ऊंचाई तक ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। महाविद्यालय की उपलब्धियों के कारण ही कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उमवि जलगांव विश्वविद्यालय ने ग्रामीण परिवेश में अच्छा काम करने के कारण महाविद्यालय की सराहना की है। महाविद्यालय को नैक (NAAC) पुनर्मूल्यांकन में भी स्थान प्राप्त हुआ है।

इस महाविद्यालय का हिंदी विभाग विगत पिछले 25-26 सालों से निरंतर हिंदी की सेवा कर रहा है तथा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु भी सदैव तत्पर है। इस विभाग से शिक्षा प्राप्त करके गये हुए कई छात्र आज सरकारी विभागों में, महाविद्यालयों में बड़े ओहदे पर कार्य कर रहे हैं। यही कार्य आज भी निरंतर रुप से जारी है।

हिंदी भाषा एवं संप्रेषण के साधन के पाठयक्रम के संदर्भ मे

भाषा मानव जाति को मिला एक ऐसा वरदान है जिसके बिना मानव सभ्यता का विकास नहीं हो सकता। भाषा हमारे विचारों, भावों, संस्कारों, रीति-रिवाजों, प्रार्थना और ध्यान, सपनों में संबंधों और संचार में सभी जगह विद्यमान है। संचार साधन और ज्ञान भंडार होने के बावजूद यह चिंतन-मनन का साधन है और प्रसन्नता का स्रोत है। भाषा अतिरिक्त ऊर्जा बिखेरती है, दूसरों में जोश पैदा करती है। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति अथवा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ज्ञान का अंतरण करती है। भाषा मानव संबंधों को जोड़ती भी है और तोड़ती है। भाषा के बिना मनुष्य मात्र एक मूक प्राणी रह जाता है। इससे हम अपनी बात और मंतव्य का संप्रेषण दूसरों तक कर पाते हैं और इसी कारण हम अन्य प्राणियों से अलग हो जाते हैं। भाषा सर्वव्यापी है, किंतु कई बार यह न केवल भाषाविदों के लिए गंभीर वस्तु होती है, वरन् दार्शनिकों, तर्कशास्त्रियों, मनोविज्ञानियों, विज्ञानियों, साहित्यिक आलोचकों आदि के लिए भी होती है। वस्तुतः भाषा एक बहुत ही जटिल मानव वस्तु है, इसलिए यह जानना आवश्यक है कि भाषा क्या है और इसका स्वरूप और प्रकृति क्या है। इसी के साथ हिन्दी भाषा के स्वरूप और इसके विकास के परिप्रेक्ष्य के बारे में जानकारी होना भी आवश्यक है।

पाठयक्रम का उद्देश्य

- हिंदी के भाषिक स्वरूप के बारे में छात्रों को अवगत कराना।
- हिंदी भाषा के विकास के बारे में छात्रों को जानकारी देना।
- हिंदी भाषा का विश्व में क्या स्थान है बताकर हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार करना।
- हिंदी भाषा की महत्त्वपूर्ण साहित्य रचनाओं का परिचय छात्रों को करवाना।
- हिंदी भाषा के प्रमुख रचनाकार और उनका हिंदी भाषा के विकास में योगदान से छात्रों को परिचित कराना

पात्रता

- उम्मीदवार 12 वीं की परीक्षा उत्तीर्ण चाहिए।
- जो उम्मीदवार बी.ए. प्रवेश के लिए पात्र है वह भी इस परीक्षा के लिये पात्र है।

पाठयक्रम शुलक

यह पाठ्यक्रम निशुल्क है।

चयन मानदंड

पहले उम्मीदवार को प्रवेश पहले दिया जाएगा।

नतिजा एवं रोजगार के लिये उपयोगी

हिंदी राजाभाषा अधिकारी बनने के लिए महत्वपूर्ण शिक्षा

- हिंदी अनुवादक बनने के लिए महत्त्वपूर्ण
- हिंदी सेट, नेट पास होने के लिए महत्त्वपूर्ण
- MPSC, UPSC, के लिए महत्त्वपूर्ण।

कृपया और जानकारी के लिये संपर्क करे

डॉ. व्ही.जी.गुरव: फोन नंबर : 9423940609

Note: Certificate will be awarded only after passing examinations